स्कूल एक समावेशी स्थान के रूप में | मेरे अनुभव

सुहैल हमीद

चलिए, हम अपने बारे में सोचते हैं। हम अपने परिवार में शिक्षार्थियों की किस पीढ़ी से आते हैं? इस सवाल का जवाब हमारे सामाजिक विशेषाधिकारों को पहचानने का एक तरीक़ा है। जाति की पदानुक्रमित सामाजिक व्यवस्था ने ऐतिहासिक रूप से ऐसे कई समुदायों को हाशिए पर डाल दिया है, जो सत्ता संरचना के मामले में नाम मात्र की संख्या में मौजूद हैं। समुदायों और उनके सामाजिक विशेषाधिकारों को राज्य की विभिन्न संस्थाओं में उनके प्रतिनिधित्व के माध्यम से भी देखा जा सकता है। साथ ही, शिक्षण संस्थानों के स्तर पर ही इस भारी अन्तर की जड़ों का पता लगाया जाना चाहिए और इसे ठीक किया जाना चाहिए।

इस लेख में मैं कुछ ऐसी घटनाओं पर विचार करने की कोशिश कर रहा हूँ जो मैंने 2019-2020 के बीच अपने स्कूली कार्यों के दौरान देखीं। साथ ही यह भी विचार करने की कोशिश है कि यह घटनाएँ किस प्रकार सामाजिक रूप से वंचित समुदायों के विद्यार्थियों के जीवन को दर्शाती हैं। नीचे दी हुई घटना मेरे एक स्कूल दौरे के समय हुई।

शिक्षक कक्षा में अलग-अलग व्यवसायों पर चर्चा कर रहे थे। उन्होंने विद्यार्थियों से पूछा कि उनके पिता और भाइयों के व्यवसाय क्या हैं।

“सर, मेरे पापा खेती करते हैं।”

“सर, मेरे भाई ट्रैक्टर चलाते हैं।”

कक्षा के विभिन्न हिस्सों से दुकानदार, निर्माण मज़दूर, पेंटर, चावल मिल के मज़दूर जैसे जवाबों की झड़ी लग गई।

“तो, होता कुछ इस तरह है कि पुरुष घर चलाने के लिए अलग-अलग काम करते हैं”, शिक्षक ने कहा।

एक बच्चे ने कहा, “सर, मेरे पापा मछली पकड़ते हैं।”

अब उन शिक्षक की ओर से सबसे अप्रत्याशित प्रतिक्रिया आई। “हाँ, ऐसे भी लोग हैं, जो इस तरह के काम करते हैं। लेकिन तुम्हारे लोग यह काम करते हैं, दूसरे नहीं।”

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के सामने सामाजिक पदानुक्रम पर एक लोकसेवक को ऐसी टिप्पणी करते देखना चौंकाने वाली बात थी। मुझे नहीं लगता कि शिक्षक ने जो कहा था, उससे वह अनजान थे।

मैंने एक साल के लिए एक स्कूल में एक एसोसिएट के रूप में काम किया। यह क्षेत्र धान के खेतों से घिरा हुआ था और गाँव के बीचोंबीच एक नहर बहती थी। यह नहर थेली-चन्द्राकर (अन्य पिछड़ा वर्ग समुदाय) बस्तियों को सतनामी-बस्ती (जिसमें ज़्यादातर लोग अनुसूचित जाति समुदाय से हैं) से अलग करती है। हालाँकि जिन लोगों से मैंने बात की उन्होंने गाँव में जाति प्रथा और अलगाव के होने की बात को ख़ारिज कर दिया, पर समुदायों की बस्तियों की भौगोलिक स्थिति ख़ुद ही इसके अस्तित्व की पुष्टि करती है।

इस गाँव में दो प्राथमिक विद्यालय हैं। एक नहर के उत्तरी भाग (सतनामी बस्ती के पास) में और एक उसके दक्षिणी भाग में (जहाँ अन्य पिछड़ा वर्ग के अधिकांश लोग रहते थे)। मैंने इनमें से दूसरे स्कूल में काम किया। गाँव के सभी हिस्सों से विद्यार्थी इस स्कूल में आते थे, लेकिन सतनामी बस्ती के विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम थी और विद्यार्थियों के कक्षा में बैठने का तरीक़ा ही बहुत कुछ बताता था।

कक्षा पहली और दूसरी में एक लड़की और दो लड़के आमतौर पर एक साथ बैठते थे। वह शर्मीले-से थे और किसी से ज़्यादा मिलते-जुलते नहीं थे। बस आँखें चुराए कक्षा के एक कोने में बैठे रहते थे। वह पड़ोसी थे, जो गाँव के एक ही हिस्से से आते थे।

फिर एक दिन कुछ ऐसा हुआ। रानी कक्षा में कुछ देर से आई और दूसरी पंक्ति में बैठ गई। ज़्यादातर विद्यार्थी तब तक बैठ गए थे। एक लड़का जो रानी के बग़ल में बैठा था उसने विरोध जताया। वह नहीं चाहता था कि रानी वहाँ बैठे। उसने रानी को पिछली पंक्ति में बैठने के लिए कहा, जहाँ वह आमतौर पर बैठती थी। यह एक ऐसा सवाल है जो हम सभी को पूछना चाहिए कि वंचित पृष्ठभूमि के बच्चे हमेशा कक्षा के कोने में बैठे क्यों पाए जाते हैं? रानी ने शायद इस प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की थी। मैं नहीं जानता कि उसने अपना स्थान किस वजह से बदला। मैं चुपचाप देखता रहा; मैं देखना चाहता था कि आगे क्या होगा। लड़के के शब्दों में अनुरोध नहीं, धमकी थी। रानी ने विरोध नहीं किया और अपने स्थान से उठने लगी। तभी मैंने कक्षा के सुगमकर्ता के रूप में हस्तक्षेप किया। मैंने रानी को स्थान बदलने से मना कर दिया। लड़के ने मेरा भी विरोध

जताया। मैंने लड़के से पूछा कि रानी को वहाँ से क्यों हटना चाहिए, तो उसके पास कोई जवाब नहीं था।

फिर सबसे बुरा हिस्सा आया। लड़के ने रानी के पास न बैठने का मन बना लिया था। उसने आमतौर पर रानी के बग़ल में बैठने वाले लड़के से अपने साथ जगह बदलने को कहा।

रानी बेहद वंचित पृष्ठभूमि से आती है। वह कई बच्चों वाले एक टूटे-फूटे घर में रहती है और परिवार में सबसे छोटी है। उसके शिक्षकों ने मुझे बताया कि पिछले साल उसने पहली कक्षा में दाख़िला लिया था, लेकिन पूरे साल मुश्किल से वह छह या सात दिन स्कूल आई। इस साल उसकी बहन, जो उसे शिक्षित करना चाहती थी, ज़ोर देकर उसे स्कूल लाई। उसकी बड़ी बहन ने कक्षा सातवीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी और वही सभी भाई-बहनों का ख़याल रखती थी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 कहती है, "U-DISE 2016-17 के आँकड़ों के अनुसार प्राथमिक स्तर पर क़रीब 19.6% विद्यार्थी अनुसूचित जाति के होते हैं, लेकिन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यह हिस्सा घटकर 17.3% रह जाता है। अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों (10.6% से 6.8%) और विकलांग बच्चों (1.1% से 0.25%) के नामांकन में गिरावट ज़्यादा गम्भीर है। इन श्रेणियों में से प्रत्येक में महिला विद्यार्थियों की संख्या में गिरावट और भी ज़्यादा है। उच्च शिक्षा में नामांकन में गिरावट और भी तेज़ी-से होती है।" (मंत्रालय, 2020)

भारत के कई अन्य स्कूलों की तरह इस स्कूल के विद्यार्थी भी विभिन्न सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमियों से आते हैं। वह जिस तरह चीज़ों को समझते हैं, सीखते हैं, होमवर्क करते हैं, कक्षा में सोते हैं, उनके कपड़े, गन्ध, बातें आदि सब उनके रहने के निकटतम परिवेश और जिस तरह उन्हें जीने के लिए अनुकूलित किया जा रहा है उस पर निर्भर करता है। एक छोटी-सी लड़की अपने प्रारम्भिक बचपन में रोज़ाना स्कूल आने से बेहतर और क्या कर सकती है? भले ही वह अपने साथियों की तुलना में सीखने के स्तर में बहुत पीछे है। इस बारे में एक शिक्षक ने कहा, "सर, वह स्कूल आ रही है, यही अपने आप में बड़ी बात है।"

इस बहिष्कार के अलग-अलग कारण हो सकते हैं। पिछले साल जब वह ज़्यादातर समय अनुपस्थित रही उस दौरान उसकी कक्षा के विद्यार्थी एक-दूसरे को जानने लग गए थे। उन विद्यार्थियों के घर एक-दूसरे के पास हैं और वे स्कूल के बाद भी एक-दूसरे से मिलते हैं। वे अलग-अलग त्यौहार एक साथ मनाते हैं। लेकिन रानी का मामला अलग है। वह गाँव के दूसरे छोर से आती है। सिवाय उन दो लड़कों के जो उसी के समुदाय के हैं, कक्षा में कोई और उस छोर से नहीं आता है। मैं अब इसे आप पर छोड़ता हूँ कि दुनिया में सबसे ज़्यादा संरचित और कार्यात्मक असमानता, लेकिन एक सुस्थापित परम्परा जाति को कैसे समझा जाए।

फिर, बाल दिवस, 14 नवम्बर को, कुछ ऐसा हुआ। दिन मस्ती और खुशियों से भरा हुआ था। कबड्डी खेलने के लिए लड़कों को चार समूहों में बाँटा गया था। शिक्षक ने कहा, "हम लड़कियों के लिए रुमाल उठाने के खेल का आयोजन करेंगे।" लड़कियों को भी चार टीमों में बाँटा गया था। यह खेल कुछ इस प्रकार खेला जाता है : गोले के बीच में एक रुमाल रखा जाता है और टीम के प्रत्येक सदस्य को एक संख्या दी जाती है। दूसरी टीम के खिलाड़ियों को भी वही संख्याएँ दी जाती हैं। जैसे ही रेफरी कोई एक संख्या बोलता है, तो दोनों टीमों की उस संख्या वाले खिलाड़ी को दौड़कर रुमाल उठाना होता है। जो भी खिलाड़ी पहले रुमाल उठा लेता है, वह अपनी टीम के लिए एक अंक जीत जाता है और अन्त में जो टीम ज़्यादा अंक पाती है वह जीतती है।

रानी ने खेल का हिस्सा बनने की कोशिश नहीं की। हमें उसे खेल में शामिल होने के लिए मजबूर करना पड़ा। खेल आगे बढ़ा और एक टीम जीत गई। उसके बाद शिक्षक ने स्पीकर के माध्यम से एक गीत बजाया। वह एक बहुत ही जाना-पहचाना लोकप्रिय छत्तीसगढ़ी गीत था। लड़कियों को जोड़ियों में इस पर नृत्य करना था। रानी को गाने को समझने और नृत्य करने में दिक़्क़त हो रही थी। फिर मैंने उस लम्हे को देखा जब उसकी सहपाठी लाली ने उसका हाथ थाम लिया और उसके साथ गाने की थाप पर नृत्य करने लगी। मैंने रानी के चेहरे पर एक ख़ास तरह की मुस्कान देखी। उसे यूँ मुस्कराते हुए देखना एक ख़ूबसूरत पल था। यह मेरा अब तक का सबसे अच्छा बाल दिवस था।

जैसे-जैसे दिन बीतते गए, मैंने देखा कि विद्यार्थी कक्षा के कार्यों में और ज़्यादा सक्रिय हो गए। इसके साथ ही मैंने शिक्षकों की बदली हुई चिन्ता और समानुभूति को भी देखा। हम प्रत्येक बच्चे, उनके सीखने के स्तर, उनकी पृष्ठभूमि उनके सीखने को कैसे प्रभावित कर रही थी और मदद के लिए हम क्या कर सकते हैं, ऐसी चीज़ों के बारे में लम्बी बातचीत किया करते थे।

इस मिश्रित समूह को ध्यान में रखते हुए मैंने हमेशा अपनी पाठ-योजनाओं को अधिक एकीकृत, समावेशी और मनोरंजक बनाने की कोशिश की। हमने एक सप्ताह तक विद्यार्थियों के नामों को लेकर अलग-अलग गतिविधियाँ कीं। यह मज़े से भरपूर था और आख़िरी दिन हमने एक पहेली के खेल की योजना बनाई। कमरे के एक तरफ़ पहेली बनाई गई थी और दूसरी तरफ़ अक्षर कार्ड रखे हुए थे।

1… 2… 3… शिक्षक ने सीटी बजाई।

अयान, मनु, वासु, निम्मी, हेमा और कृष अक्षर कार्डों को इकट्ठा करने के लिए दौड़ पड़े और फिर उन अक्षरों को अपनी पहेली पर जमाने वापिस दौड़े। लेकिन मनु को अक्षर नहीं मिले।

वह खोजता रहा, जबकि उसके दोस्त इधर-उधर भाग रहे थे। पहेली पूरी करने के बाद कृष चिल्लाया, "मैं जीत गया, मैं जीत गया!"

दूसरे बच्चों ने भी ऐसा ही किया। फिर उन्होंने देखा कि मनु कोने में उदास बैठा है। कृष और वासु उसकी पहेली के अक्षरों को खोजने लगे और उसे पूरा भी किया। फिर वे चिल्लाए, "मनु जीत गया, मनु जीत गया!"

मैं ख़ुद अपने पुराने विचारों को तोड़ते-मरोड़ते और भूलते हुए उनसे रोज़ाना नई चीज़ें सीखा रहा था। उन्होंने मुझे सिखाया कि *समावेश* की शुरुआत *अन्त:क्रिया* से होती है, ख़ासकर बच्चों के मामले में। समावेश एक साथ रहने और एक-दूसरे की मदद करने की एक महीन परत है।

सुहैल अब्दुल हमीद छत्तीसगढ़ में धमतरी ज़िले के नगरी ब्लॉक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ एसोसिएट रिसोर्स पर्सन हैं। उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया से स्नातक और पुदुचेरी विश्वविद्यालय से राजनीतिविज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। सुहैल ने बच्चों के आर्ट रूम प्रोजेक्ट में कोच्चि-मुज़िरिस-बियनेल के साथ वालंटियर के रूप में काम किया है। उनसे suhail.hameed@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : सात्विका ओहरी

लैंगिक पहचान के बारे में जागरूकता जल्दी शुरू हो जाती है, इसलिए हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि लैंगिकता द्विआधारी नहीं बल्कि एक विस्तार है। अपनी कक्षाओं में बच्चों से लैंगिक भूमिका और व्यवहार की अपेक्षाएँ निर्धारित न करें। बल्कि, कहानियों में निरूपित लैंगिकता भूमिकाओं को चुनौती दें और विद्यार्थियों को अपनी धारणाओं और विचारों की पड़ताल करने में मदद करें।

- प्रिया कृष्णमूर्ति, कनिष्ठ नागरिकों का निर्माण करना - पाँच सामान्य रास्ते, पेज 87